ANOTHER SHORT STORIES

सहेली

मैं जिस कंपनी में काम करता हूँ वहाँ की मैडम जो सर की बीवी है जिसकी उम्र ४५ साल है वो मुझे बहुत पसंद है। मैं कई बार उसको प्रपोज़ करने का मौका ढूंढता रहा। एक दिन उस मैडम ने मुझे अपने घर कंप्यूटर के काम से बुलाया था, क्योकि मैं कंप्यूटर में मास्टर हूँ। और उसे कंप्यूटर सीखना था।

उस दिन मैं और मैडम घर में अकेले थे। मौका देख कर मैंने उसे प्रपोज़ कर दिया। मैंने उसको बोला कि क्या हम रिलेशनशिप रख सकते हैं?

यह बात हम दोनों के सिवा किसी को मालूम नहीं होगी। तो उसने उस वक़्त मुझे कोई जवाब नहीं दिया और मैं सॉरी कह के निकल गया। तीन चार दिन बाद फिर उसने मुझे अपने घर बुलाया और मेरे प्रपोज़ को उसने स्वीकार किया।

मैं शादीशुदा हूँ इस लिए उसने मुझे पहले पूछा कि तुम अपनी बीवी के साथ क्या क्या करते हो? वो मुझे पहले बताओ।

तो मैंने कहा कि मैं अपनी बीवी के साथ पहले फ़ोर-प्ले करता हूँ। उसके बूब्स चूसता हूँ, फ़िर उसकी चूतड़ चूसता हूँ, उसका सारा पानी मैं पी जाता हूँ। मुझे चूतड़ चूसना बहुत अच्छा लगता है और हर औरत को कोई ऐसा करे वो बहुत पसंद होता है, यह मैं जानता हूँ। ऐसा करने से वो बहुत उत्तेजित हो जाती है। फिर वो भी मेरे लंड को चूसती है तो मेरा ७" लंड कड़क हो जाता है। फ़िर मैं उसको आगे से और पीछे से दोनों तरफ़ चोदता हूँ।

ये सब सुनकर मैडम उत्तेजित हो गई। फ़िर मैंने उसके बूब्स को दबाया और उसके कपड़े निकाल के उसकी ब्रा निकाल दी फ़िर बूब्स चूसने लगा। ये सब हमने सोफे पर बैठ कर किया। ऐसे करने से वो बहुत उत्तेजित हो गई और मुझे अपने बेडरूम में आने को बोला। तो हम दोनों बेडरूम में चले गए।

फ़िर मैंने उसका पेटीकोट निकाला। वो अपने पैंटी में किसी अप्सरा जैसी दिखने लगी। मैंने सोचा कि आज मुझे यहीं धरती पर ही स्वर्ग देखने को मिल गया। उसके बूब्स भी बहुत बड़े थे। फ़िर मैंने उसकी पैंटी को निकाला और अपनी जीभ से उसकी चूत को चाटने लगा। उसकी चूत से अजीब सा पानी छुट रहा था वो मैं सारा पी गया। फ़िर हम दोनों बहुत उत्तेजित हो गए।

फ़िर मैंने अपने सारे कपड़े निकाल दिए। वो तो मेरे ७" लण्ड को देखती ही रह गई जैसे ऐसा लण्ड उसने कभी देखा ही न हो। फ़िर उसने मेरे सारे शरीर पर चुम्मी ले के मेरा लण्ड अपने मुँह में डाल दिया। मैं तो बहुत उत्तेजित हो गया। फ़िर मैंने उसके होंठों मे होंठ डाल

कर उसकी जीभ को चूसा। अब हम दोनों आपे में नहीं रहे। फ़िर मैंने अपना लण्ड उसकी चूत में डाल दिया। उसकी चूत भीग गई थी इस लिए मेरा लण्ड तुंरत उसकी चूत में चला गया।

फ़िर में करीब १० मिनट तक उसको चोदता रहा। फ़िर में नीचे आ गया और वो ऊपर आकर अपनी प्यास बुझाने लगी। उसके बाद हम दोनों साथ में झड़ चुके थे। उसने मुझे बोला कि ऐसा आनंद मुझे अपनी जिंदगी में पहली बार मिला। मेरे पति बिज़नस में व्यस्त रहते हैं और टेंशन में मुझे सुख नहीं देते हैं। हम दोनों ने एक दूसरे का साथ निभाने का वादा किया।

हम कई बार होटल में और उसकी गाड़ी में भी मिल के मजा लूटते रहे।

जब अंजू को पहली बार चोदा

ये मेरी और मेरी गर्लफ्रेंड की कहानी है . उसका नाम अंजू है . उसकी भी उम्र १८ साल है . वह मेरे घर के पास में रहती है . दिखने में वह बहुत सेक्सी है . उसकी चुचियो को देखकर मेरा मन उसको एक बार छोड़ने का करता है . एक बार मै एक हसिनाओ को छोड़ने के नियम की किताब पढ़ रहा था . पढ़ते हुए वो किताब मैंने केमिस्ट्री की किताब में रख दी . एक दिन वो मेरे पास केमिस्ट्री की किताब लेने आई . मैंने वो किताब उसे दे दी . वो किताब लेकर चली गई . जब उसने वो किताब खोली तो उसमे वो किताब निकली उस किताब के कवर पेज पर नंगी लड़की की तस्वीर छपी थी . उसने वो किताब पढ़ी . उसे बहुत मज़ा आया . अगले दिन वो उस किताब को मेरे घर वापस करने आई .मैंने उससे पूछा कि किताब कैसी है ? उसने कहा इस किताब से तो अंदर वाली किताब अच्छी है . उसने मुझसे कहा कि तुम कल मेरे घर आना मुझे तुमसे कुछ बात करनी है . अगले दिन मै उसके घर गया . उसके घर में कोई नही था . घर में वो बिल्कुल अकेली थी . वो मेरे पास आई और बोली यार तुम बहुत सेक्सी हो मैंने भी कहा तुम भी कम सेक्सी नही हो . उसने कहा मुझे तुम्हारे जैसे लड़के कि ही जरुरत थी . इतने में उसने मुझे पकड़ कर किस करना चालू कर दिया . मैंने उसका टॉप और जींस उतर दी . अब वो केवल ब्रा और पैंटी में थी . और उसने भी मेरी शर्ट और पेन्ट उतार दी . मैंने भी अंडरवियर उतार दी . मै बुल्कुल नंगा हो गया था . मेरा ७ ' लंड बहार निकल आया . मैंने उस चूसने को कहा . वो मेरा लंड अपने मुह में डालकर चूसने लगी . तभी मैंने भी उसकी ब्रा और पैंटी उतर दी . वो मेरे

सामने बिल्कुल नंगी थी . उसकी नंगी चुचिया बाहर निकल आई थी . मैंने उसकी चुचियो को मसलना शुरु कर दिया . वो बोली तुम तो बड़े चुदाकर हो , पहले किसी को चोदा है क्या ? मैंने कहा नही . वो बोली मैंने भी पहले किसी से नही चुदवाया है . मैंने उसकी दहनी चुचु को मुह से चुसना शुरु कर दिया . उसके मुह से अहह ….. अह …. निकल रहा था . अब मेरा लंड उसको चोदने के लिए बिल्कुल तैयार था . मैंने उसको बिस्टर पर लिटाया और अपना लंड उसकी छुट में डाल दिया . छुट में घुसते ही वो अहह …. अहह …. चिल्लाने लगी . वो बोली मत करो दर्द होता है . मैंने कहा कि अभी थोड़ा दर्द होगा , बाद में बड़ा मज़ा आएगा इसके साथ ही मैं इक और धक्का लगाया मेरा लंड उसकी छुट में ४ ’ चला गया . वो चिल्लाने लगी . मैंने लंड अंदर बाहर करना शुरु कर दिया . मैंने अबकी बार ज़ोर का धक्का दिया मेरा लंड लगभग पूरा चला गया था . उसकी चूत से खून निकल पड़ा . वो बोली मुझे तुमसे नही चुदवाना है . मुझे बहुत दर्द होता है . मैंने कहा अब तो थोड़ा ही बाकी रह गया है . मैंने उसे डोग स्टाइल में लिटाया और जोर से चोदना शुरु कर दिया . अब उसे दर्द कम हो रहा था उसने कहा कि और तेज़ी से चोदो . मैंने स्पीड बढ़ा दी . अचानक मेरे लंड से पानी निकल पड़ा और उसकी छूट में चला गया . मैंने अपना लंड बाहर निकला . वो मेरे लंड को चाटने लगी . मैंने उससे कहा कि क्या तुम मुझे अपना दूध नही पिलाओगी ? वो बोली ये तो तुम्हारे ही लिए है . मैंने उसकी चूची को मुह से चुसना शुरु कर दिया . उसका दूध पीकर बड़ा मज़ा आया . वो बोली अब तुम मुझे हफ्ते में एक बार जरुर चोदा करो . मैंने कहा ठीक है .अब मै उसको हफ्ते में एक बार जरुर चोदता हु . हम साथ में ब्लू फ़िल्म देखने जाते है .

किस्सा चुदाई कि रात का

किस्सा है ये चुदाई कि रात का
उस रात मेरे मन में ना जाने क्या झमेला था
क्योंकि मैं घर पर एकदम अकेला था
अकेलेपन में मैं तन्हाई के गीत गुनगुना रहा था
और बीच बीच में अपने लन्ड को भी हिला रहा था
क्योंकि किसी कन्या क ख्याल आते ही ये दिल बड़ा हो जाता है

ये मासूम लन्ड भी इसकी तमन्ना समझते हुए खुद ही खड़ा हो जाता है
अब है तो खड़ा होगा ही
छोटा है तो बड़ा होगा ही
अचानक मुझे लगा कि कोई बुदबुदा रहा है
दिमाग गंदा हो तो लगता है कि कोइ चुदवा रहा है
मैने दरवाजा खोला तो वहां एक गोरी थी
उसके मम्में और गान्ड देख कर लग रहा थी कि आज तक कोरी थी
मैने उसे अपने घर में अन्दर बुला लिया
ठंड बहुत थी सो मैने कुन्डा लगा दिया
मैने माज़रा पूछा तो पता चला वो रास्ता भूल गयी
मेरी हिम्मत भी उसकी हालत देख के खुल गयी
मैने उसे बाहों में भर लिया था
क्योंकि उसे चोदने का पक्का इरादा कर लिया था
वो मेरी बांहों में आकर शरमा रही थी
और मेरी सांसों की गरमी से वो भी गरम हुई जा रही थी
मैने धीरे से एक हाथ उसके मम्मों पर धर दिया
इन हाथों ने ही उसका सारा काम कर दिया
मेरा दूसरा हाथ उसकी चूत पे था
और धयान उसके सूट पे था
आखिर उसकी जवानी को जो संवारना था
इसलिये उसका सूट भी उतारना था
मैनें उसकी कमीज़ उतार कर मम्म दबाने शुरू कर दिये
सलवार को अलग किया और शोट लगाने शुरू कर दिये
वो आहें भर कर मज़ा दे रही थी
या यूं कहें कि लड़की होने की सज़ा ले रही थी
मेरा लन्ड उसकी चूत के अन्दर था
ये भी मज़ का एक मंजर था
वो कह रही थी कि चोदते रहो चोदते रहो और चूत को फ़ाड़ डालो
आज अपने लन्ड से मेरी चूत में झण्डे गाड़ डालो

मैं भी पूरे दम से उसे चोदे जा रहा था
और चूत चुदाई के इस खेल में दोनों को मज़ा आ रहा था
मेरे लन्ड से पानी निकला तो वो संतुष्ट हो गयी
नंगी ही वो मुझ्से लिपट के सो गयी
थोड़ी देर बाद उसने मेरे लन्ड को पकड़ लिया
मुझे कुछ समझ आता इससे पहले ही अपने होठों में जकड़ लिया
वो मेरे लन्ड को चूस रही थी इसलिये लन्ड खड़ा हो गया
एक बार फ़िर से ये लन्ड चुदाई के लिये खड़ा हो गया
अब उसे अपनी गाण्ड मुझसे मरवानी थी
उसकी चूत कि तरह उसकी गाण्ड भी सुहानी थी
मैने भी पूरी पावर से अपना लन्ड उसकी गाण्ड में डाला
और एक ही बार में उसकी गाण्ड को फ़ाड़ डाला
उसकी चीख ने मुझे झन्झोड़ दिया
साथ ही मेरे लन्ड ने एक बार फ़िर पानी छोड़ दिया
अब मुझे पता चला मैं कहां था
जिसमें मैं था वो एक दूसरा ही जहां था
मैने गाण्ड और चूत दोनो ही मारी थी
लेकिन यारो सच जो ये है कि मैनें सपने में मुठ मारी थी
मेरा अन्डरवियर एकदम गीला हो गया था
मुठ इतनी जोर से मारी कि लन्ड भी नीला हो गया था
यारो सपना ही सही लेकिन मज़ा तो किया
अपने लन्ड को चूत के अन्दर तो किया
तो दोस्तो ! चोदो, चुदाओ और अपनी लाइफ़ को खुशहाल बनाओ

मेरी पत्नी मिनी और डोली भाभी
हम लोग गाँव के रहनेवाले हैं. हमारा गाँव सहर से ४४ किलोमीटर दूर है. पास के ही एक गाँव में भैया की शादी हो गयी. डॉली भाभी बहुत ही अच्च्ची थी और खूबसूरत भी. भैया की उमर 20 साल की थी. वो उमर में भैया से 4 साल छ्होटी थी. मैं डॉली भाभी से उमर में 1 साल बड़ा था. डॉली भाभी की उमर 16 साल की थी. गाँव में ये उमर शादी के लिए काफ़ी

मानी जाती है. शादी के बाद भैया की नौकरी यूपी के एक कंपनी में लग गयी. वो पटना में ही रहने लगे. वो खुद ही घर का सारा काम करते थे और खाना भी बनाते थे. जब उन्हें खाना बनाने में और घर का काम करने में दिक्कत होने लगी तो उन्होने डॉली भाभी को भी पटना बुला लिया. मम्मी तो थी नहीं केवल पापा ही थे. कुच्छ दीनो के बाद पापा का भी स्वरगवस हो गया तो भैया ने मुझे अपने पास ही रहने के लिए बुला लिया. मैं उनके पास पटना आ गया और वहीं रह कर पढ़ाई करने लगा. मैने Bआ तक की पढ़ाई पूरी की और फिर नौकरी की तलाश में लग गया. अभी मुझे नौकरी तलाश करते हुए 1 साल ही गुज़रे थे की भैया का रोड एक्षसीडेंट में स्वरगवस हो गया. उस समय मेरी उमर 21 साल की हो चुकी थी. अब तक मैं एक दम हटता कटता नौजवान हो गया था. मैं बहुत ही ताकतवर भी था क्यों की गाँव में कुश्ती भी लड़ता था. मुझे भैया की जगह पर नौकरी मिल गयी. अब घर पर मेरे और डॉली भाभी के अलावा कोई नहीं था. वो मुझसे मुझसे बहुत प्यार करती थी. मैं भी उनकी पूरी देखभाल करता था और वो भी मेरा बहुत ख़याल रखती थी. डॉली भाभी को ही घर का सारा कम करना पड़ता था इस लिए मैं भी उनके काम में हाथ बता देता था. वो मुझसे बार बार शादी करने के लिए कहती थी. एक दिन डॉली भाभी ने शादी के लिए मुझ पर ज़्यादा दबाव डाला तो मैने शादी के लिए हन कर दी. डॉली भाभी के एक रिश्तेदार थे जो की उनके गाओं में ही रहते थे. उनकी एक लड़की थी जिसका नाम मिन्नी था. डॉली भाभी ने मिन्नी के साथ मेरी शादी की बात चलाई. बात पक्की करने से पहले डॉली भाभी ने मुझे मिन्नी की फोटो दिखा कर मुझसे पूचछा, कैसी है. मैं मिन्नी की फोटो देख कर डांग रह गया. मैं समझता था की गाओं की लड़की है, ज़्यादा खूबसूरत नहीं होगी लेकिन वो तो बहुत ही खूबसूरत थी. मैने हन कर दी. मिन्नी की उमर भी 16 साल की ही थी. काहिर शादी पक्की हो गयी. मिन्नी के मम्मी पापा बहुत ग़रीब थे. 1 महीने के बाद ही हमारी शादी गाओं के एक मंदिर में हो गयी. शादी हो जाने के बाद दोपहर को डॉली भाभी मुझे और मिन्नी को लेकर पटना आ गयी. घर पर कुच्छ पड़ोस के लोग बहू देखने आए. जिसने भी मिन्नी को देखा उसकी बहुत तारीफ की. शाम तक सब लोग अपने अपने घर चले गये. रात के 8 बाज रहे थे. डॉली भाभी ने मुझसे कहा, आज मैं बहुत तक गयी हून. तुम जा कर होटेल से खाना ले आओ. मैने कहा, ठीक है. मैने झोला उठाया और खाना लाने के लिए चल पड़ा. मेरा एक दोस्त था विजय. उसका एक होटेल था.

मैं सीधा विजय के पास गया. विजय बोला, आज इधर कैसे. मैने उस से सारी बात बता दी. वो मेरी शादी की बात सुनकर बहुत खुश हो गया. हम दोनो कुच्छ देर तक गॅप शॅप करते

रहे. विजय ने मुझसे कहा, तुझे मज़ा लेना हो तो मैं एक तरीका बताता हून. मैने कहा, बताओ. वो बोला, तुम मिन्नी की छूट को कुच्छ दिन तक हाथ भी मत लगाना. तुम केवल उसकी गांद मारना और अपने आप को काबू में रखना. कुच्छ दिन तक उसकी गांद मरने के बाद तुम उसकी चुदाई करना. मैने सोचा की विजय ठीक ही कह रहा है. मैने उस से कहा, ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा. उसने मेरे लिए सबसे अच्च्छा खाना जो की उसके होटेल में बनता था, पॅक करा दिया. मैं खाना लेकर घर वापस आ गया. हम सब ने खाना खाया. डॉली भाभी ने मिन्नी को मेरे रूम में पहुचा दिया. उसके बाद उन्होने मुझे अपने रूम में बुलाया और कहने लगी, मिन्नी अभी छ्होटी है. उसके साथ बहुत आराम से करना. मैने मज़ाक किया, मुझे करना क्या है. वो बोली, शैतान कहीं का. तू तो ऐसे कह रहा है की जैसे कुच्छ जनता ही नहीं. मैने कहा, मुझे कुच्छ नहीं मालूम है. डॉली भाभी ने मुस्कुराते हुए कहा, पहले उस से प्यार की दो बातें करना. उसके बाद अपने औज़ार पर ढेर सारा तेल लगा लेना. फिर अपना औज़ार उसके च्छेद में बहुत ही धीरे धीरे घुसा देना. जल्दी मत करना नहीं तो वो बहुत चिल्लाएगी. वो अभी 16 साल की ही है. समझ गये ना. मैने कहा, हन, मैं समझ गया. डॉली भाभी ने कहा, अब जा अपने कमरे में. मैं अपने कमरे में आ गया. मिन्नी बेड पर बैठी थी मैं भी भी उसके बगल में बैठ गया. मैने उस से पूचछा, मैं तुम्हें पसंद हून. उसने अपना सिर हन में हिला दिया. मैने कहा, ऐसे नहीं, बोल कर बताओ. उसने शरमाते हुए कहा, हन. मैने पुचछा, कहाँ तक पढ़ी हो. वो बोली, केवल 6 तक. मैने कहा, मेरी डॉली भाभी ने मुझे कुच्छ सिकाहाया है. क्या तुम्हें भी किसी ने कुच्छ सिकाहाया है. वो कुच्छ नहीं बोली तो मैने कहा, अगर तुम कुच्छ नहीं बोलॉगी तो मैं बाहर चला जौंगा. इतना कह कर मैं खड़ा हो गया तो उसने मेरा हाथ पकड़ लिया. मैं उसके बगल में बैठा गया. मैने कहा, अब बताओ. वो कहने लगी, मेरे घर पर केवल मेरे मम्मी पापा ही हैं. उन्होने तो मुझसे कुच्छ भी नहीं कहा लेकिन मेरे पड़ोस में रहने वाली डॉली भाभी ने मुझसे कहा था की तुम्हारे पति जब अपना औज़ार तुम्हारे च्छेद में अंदर घुसाएँगे तब बहुत दर्द होगा. उस दर्द को बर्दस्त करने की कोशिश करना. ज़्यादा चीखना और चिल्लाना मत नहीं तो बड़ी बदनामी होगी. अपने पति से कह देना की अपने औज़ार पर ढेर सारा तेल लगा लेंगे. मैने आज तक औज़ार नहीं देखा है. ये औज़ार क्या होता है. मैने कहा, तुमने आदमियों के पेशाब करते समय उनकी च्छूननी देखी है. उसने कहा, हन, गाओं में तो सारे मर्द कभी भी कहीं भी पेशाब करने लगते हैं. आते जाते समय मैने काई बार देखा है.

लेकिन उसे तो गाओं में लंड कहते हैं. मैने कहा, उसी को औज़ार भी कहते हैं. वो बोली, मैने

तो देखा है की किसी किसी का बहुत बड़ा होता है. मैने कहा, जैसे आदमी काई तरह के होते हैं ठीक उसी तरह उनका औज़ार भी काई तरह का होता है. मेरा औज़ार देखोगी. वो बोली, मुझे शरम आती है. मैने कहा, अब तो तुम्हें हमेशा ही मेरा औज़ार देखना पड़ेगा. उसे हाथ में भी पकड़ना पड़ेगा. देखोगी मेरा औज़ार. वो बोली, ठीक है, दिखा दो. मैं पहले से ही जोश में था. मैने अपनी शर्ट और बनियान उतार दी. उसके बाद मैने अपनी पंत और चड्डि भी उतार दी. मेरा 9" लंबा और खूब मोटा लंड फंफनता हुआ बाहर आ गया. मैने अपना लंड उसके चेहरे के सामने कर दिया और कहा, देख लो मेरा औज़ार. उसने तिरच्चि निगाहों से मेरे लंड को देखा और शरमाते हुए बोली, तुम्हारा तो बहुत बड़ा है. इतना कह कर उसने अपने हाथों से अपने चेहरे को धक लिया. मैने उसका हाथ पकड़ कर उसके चेहरे पर से हटा दिया और कहा, शरमाती क्यों हो. जी भर कर देख लो इसे. अब तो सारी ज़िंदगी तुम्हें मेरा औज़ार देखना भी है और उसे अपने च्छेद के अंदर भी लेना है. मैने तो अपने कपड़े उतार दिए हैं अब तुम भी अपने कपड़े उतार दो. वो बोली, मैं अपने कपड़े कैसे उतार सकती हून, मुझे शरम आती है. मैने कहा, अगर तुम अपने कपड़े नहीं उतरोगी तो मैं अपना औज़ार तुम्हारे च्छेद में कैसे घुसौंगा. वो कुच्छ नहीं बोली. मैने मिन्नी के कपड़े उतरने शुरू कर दिए तो वो शरमाने लगी. धीरे धीरे मैने उसे एक दम नंगा कर दिया. मैं उसके संगमरमर जैसे खूबसूरत बदन को देख कर डांग रह गया. उसकी चुचियाँ अभी बहुत छ्होटी छ्होटी थी. मैने उसे बेड पर लिटा दिया और उसकी चुचियों को सहलाते हुए उसे होठों को चूमने लगा. मैने देखा की उसकी छूट पर अभी बहुत हल्के हल्के बॉल ही उगे थे और उसकी छूट एक दम गुलाबी सी दिख रही थी. मैने उसकी चुचियों को ंसालना शुरू कर दिया तो वो बोली, मुझे गुदगुदी हो रही है. मैने पुचछा, अच्च्छा नहीं लग रहा है. वो बोली, बहुत अच्च्छा लग रहा है. मैने उसके निपल्स को मूह में लेकर चूसना शुरू कर दिया तो वो सिसकारियाँ भरने लगी. उसके बाद मैने उसकी छूट को शालाना शुरू कर दिया. उसे गुदगुदी होने लगी. उसने मेरा हाथ हटा दिया तो मैने पुचछा, क्या हुआ. वो बोली, बहुत ज़ोर की गुदगुदी हो रही है. मैने कहा, अच्च्छा नहीं लग रहा है क्या. वो बोली, अच्च्छा तो लग रहा है. मैने कहा, तुमने मेरा हाथ क्यों हटाया. अगर तुम ऐसा ही करोगी तो मैं बाहर चला जौंगा. वो बोली, ठीक है, मैं अब तुम्हें कुच्छ भी करने से माना नहीं करूँगी. मैने कहा, फिर ठीक है. मैने उसकी छूट को सहलाना शुरू कर दिया. थोड़ी ही देर में उसकी छूट गीली होने लगी. वो ज़ोर ज़ोर से सिसकारियाँ भरने लगी. मैने एक उंगली उसकी चूर के अंदर दल दी तो उसने ज़ोर की सिसकारी ली. मेरा लंड अब तक बहुत ज़्यादा टाइट हो चुका था. थोड़ी देर तक मैं उसकी

छूट में अपनी उंगली अंदर बाहर करता रहा तो वो झड़ने लगी.
झाड़ते समय उसने मुझे ज़ोर से पकड़ लिया और बोली, तुम्हारे उंगली करने से मुझे तो पेशाब हो रहा है. मैने कहा, ये पेशाब नहीं है. जोश में आने के बाद छूट से पानी निकलता है. वो कुच्छ नहीं बोली, मेरी उंगली उसके छूट के पानी से एक दम गीली हो चुकी थी. थोड़ी ही देर में वो पुर जोश में आ गयी तो मैने कहा, अब मैं अपना औज़ार तुम्हारे च्छेद में घुसौंगा. तुम पेट के बाल लेट जाओ. वो पेट के बाल लेट गयी. मैने देखा की उसकी गांद भी एक दम गोरी थी. उसकी गांद का च्छेद बहुत ही हल्के भूरे रंग का था. मैं अपनी उंगली उसकी गांद के च्छेद पर फिरने लगा. उसके बाद मैने एक झटके से अपनी एक उंगली उसकी गांद में घुसा दी. वो ज़ोर से चीखी. मैने कहा, अगर तुम ऐसे चीखोगी तो डॉली भाभी आ जाएगी. वो बोली, दर्द हो रहा है. मैने कहा, दर्द तो होगा ही. अभी तो मैं अपना लंड तुम्हारे गांद में घुसौंगा. थोड़ी देर तक मैं अपनी उंगली उसके गांद में अंदर बाहर करता रहा. वो बोली, मेरा च्छेद तो बहुत ही छ्होटा है और तुम्हारा औज़ार बहुत बड़ा. अंदर कैसे घुसेगा. मैने कहा, जैसे उर औरतों के अंदर घुसता है. वो बोली, तब तो मुझे बहुत दर्द होगा. मैने कहा, इसी लिए तो तुम्हारी डॉली भाभी ने तुमसे कहा था की दर्द को बर्दस्त करना, ज़्यादा चीखना चिल्लाना मत. वो बोली, मैं समझ गयी. मैं उसके उपर आ गया तो वो बोली, तेल नहीं लगाओगे. मैने कहा, लगौंगा. मैने अपने लंड पर ढेर सारा तेल लगा लिया. उसके बाद मैने उसकी गांद के च्छेद पर अपने लंड का सूपड़ा रखा और उस से कहा, अब तुम अपना मूह ज़ोर से दबा लो जिस से तुम्हारे मूह से चीख ना निकले. उसने कहा, ठीक है, दबा लेती हून लेकिन बहुत धीरे धीरे घुसना. मैने कहा, ह्न, मैं बहुत धीरे ही घुसौंगा. उसने अपने हाथों से अपने मूह को दबा लिया. मैने तोड़ा सा ही ज़ोर लगाया था की वो ज़ोर से चीखी. मेरे लंड का सूपड़ा भी अभी उसके गांद में नहीं घुस पाया था. वो रोने लगी और बोली, मुझे छ्चोड़ दो, बहुत दर्द हो रहा है. मैने कहा, दर्द तो होगा ही. तुम अपना मूह ज़ोर से दबा लो. उसने अपना मूह फिर से दबा लिया तो मैने इस बार कुच्छ ज़्यादा ही ज़ोर लगा दिया. वो दर्द से तड़से हुए ज़ोर ज़ोर से चीखने लगी, दीदी, बचा लो मुझे, नहीं तो मैं मार जौंगी. इस बार मेरे लंड का सूपड़ा उसकी गांद में घुस गया. उसकी गांद से खून निकल आया था. वो इतने ज़ोर ज़ोर से चीख रही थी की मैं तोड़ा सा दर गया. मैने एक झटके से अपना लंड बाहर खीच लिया. पक की आवाज़ के साथ मेरे लंड का सूपड़ा उसकी गांद से बाहर आ गया. मैने उसे चुप करते हुए कहा, अगर तुम ऐसे ही चिल्लाओगी तो काम कैसे बनेगा. वो बोली, मैं क्या करूँ, बहुत दर्द हो रहा था. मैने कहा, तोड़ा सबर से काम लो. फिर सब ठीक हो जाएगा. अब

तुम अपना मूह दबा लो, मैं फिर से कोशिश करता हून. उसने अपना मूह दबा लिया तो मैने फिर से अपने लंड का सूपड़ा उसकी गांद के च्छेद पर रख दिया. उसके बाद मैं उसकी कमर के नीचे से हाथ दल कर उसे ज़ोर से पकड़ लिया. फिर मैने पुर ताक़त के साथ ज़ोर का धक्का मारा. वो बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी. वो मेरे नीचे से निकलना चाहती थी लेकिन मैने उसे बुरी तरह से जाकड़ रखा था. मेरा लंड इस धक्के के साथ उसकी गांद में 3" तक घुस गया.

वो ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते हुए डॉली भाभी को पुकार रही थी, दीदी, बचा लो मुझे नहीं तो ये मुझे मार डालेंगे. बहुत दर्द हो रहा है. तभी कमरे के बाहर से डॉली भाभी की आवज़ आई, ऋषि, क्या हुआ. मिन्नी इतना क्यों चिल्ला रही है. मैने कहा, मैं अपना औज़ार अंदर घुसा रहा था लेकिन ये मुझे घुसने ही नहीं दे रही है. बहुत चिल्ला रही है. डॉली भाभी ने कहा, तुम दोनो बाहर आ जाओ. मैं मिन्नी को समझा देती हून. मैने लूँगी पहन ली और मिन्नी से कहा, बाहर चलो डॉली भाभी बुला रही है. वो उतना चाहती थी लेकिन उठ नहीं पा रही थी. मैने उसे सहारा दे कर खड़ा किया. उसने केवल अपनी सारी बदन पर लपेट ली. मैं उसे सहारा दे कर बाहर ले आया क्यों की वो ठीक से चल भी नहीं पा रही थी. डॉली भाभी ने मिन्नी से पुचछा, इतना क्यों चिल्ला रही थी. वो रोते हुए डॉली भाभी से कहने लगी, ये अपना औज़ार मेरे च्छेद में घुसा रहे थे इस लिए मुझे बहुत दर्द हो रहा था. डॉली भाभी ने कहा, पहली पहली बार दर्द तो होगा ही. सभी औरतों को होता है. ये कोई नयी बात थोड़े ही है. डॉली भाभी ने मुझसे कहा, मैने तुझसे कहा था ना की तेल लगा कर धीरे धीरे घुसना. मैने कहा, मैं तेल लगा कर धीरे धीरे ही घुसने की कोशिश कर रहा था. जैसे ही मैने तोड़ा सा ज़ोर लगाया और मेरे औज़ार का टोपा ही इसके च्छेद में घुसा की ये ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी. इसके चिल्लाने से मैं दर गया और मैने अपना औज़ार बाहर निकल लिया. उसके बाद मैने इसे स्मझाया तो ये राज़ी हो गयी. मैने फिर से कोशिश की तो ये फिर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी और मेरा औज़ार केवल ज़रा सा ही अंदर घुस पाया. तभी आप ने हम दोनो को बुलाया और हम बाहर आ गये. डॉली भाभी ने कहा, इसका मतलब तुमने अभी तक कुच्छ बीयी नहीं किया, मैने कहा, बिल्कुल नहीं. तुम चाहो तो मिन्नी से पूच्छ लो. डॉली भाभी ने मिन्नी से पुचछा, क्या ये सही कह रहा है. उसने अपना सिर हन में हिला दिया. डॉली भाभी ने मिन्नी से कहा, तुम कमरे में जाओ